IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों के लिये एक आवश्यकता : कार्यात्मक शैक्षणिक अनुकूलन कौशल

*डॉ. मधुलिका वर्मा
एवं
** कु. माधवी भागवत सगरे

*उपाचार्य शिक्षा अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

**सहायक प्राध्यापक लोकामन्य तिलक शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

सारांश

मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों की अपनी अलग प्रकृति होती हैं और उनके लिए, उसी प्रकृति के अनुरूप हमें शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का चयन करना होता है। अतः यह आवश्यक हैं, कि मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों के लिए कार्यात्मक शैक्षणिक अनुकूलन कौशल की आवश्यकताओं को पहचाने, एवं उनमें कार्यात्मक शैक्षणिक अनुकूलन कौशल को बढ़ाने में आने वाली समस्याओं को दूर करने के लिए दिये गये, प्रशिक्षण आव्यूह को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग करे, एवं इन विद्यार्थियों को विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करना एवं उनकी आवश्यकता अनुसार दैनिक, मासिक, साप्ताहिक, वार्षिक जरूरतों में आत्मनिर्भर बना सकते है।

प्रस्तावना

अनुकूलनशील व्यवहार या अनुकूली कार्य स्वतंत्र रूप से रहने या उम्र के न्यूनतम स्वीकार्य स्तर पर कौशल को दर्शाता है। अनुकूली व्यवहार के लिये कुछ कौशलों का होना बहुत आवश्यक हैं । जब हम मध्यम बौद्धिक अक्षम विद्यार्थियों की बात करते है, तो उनके दैनिक जीवन यापन का कौशल जैसे कपड़े पहनना, खुद से खाना खाना, अपने दैनिक कार्य करना, बातचीत का कौशल, जैसे :– जो कहा गया है, उसे समझना और उसके अनुरूप जवाब देने में सक्षम होना, साथियों, परिवार के सदस्यों, दम्पत्तियों व अन्य के साथ सामाजिक कौशल यह सभी अनुकूलित व्यवहार के लिये आवश्यक है। मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिये अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ इंटेलेक्चुअल डेवलपमेंन्ट डिसेबिलिटी के अनुसार मुख्य रूप से अनुकूलन कौशल :– संचार, स्वयं की देखभाल, घर में रहने वाले (घरेलु), सामाजिक, सामुदायिक उपयोग, आत्म दिशा, स्वास्थ्य और सफ़ाई, कार्यात्मक शिक्षाविद, अवकाश के समय का सदुपयोग (फुर्सत), कृत्य/कार्य है।

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियों की तरह सामान्य शैक्षिक क्रिया नहीं कर पाते हैं। उन्हें शिक्षा देते समय यह ध्यान देना चाहिए कि कौशल व्यवहार कार्य पर आधारित हो। ऐसे कौशल हो जिसे मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थी दैनिक जीवन के क्रिया–कलाप में प्रयोग कर सके। कुछ ऐसे भी मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थी है। जो कार्यात्मक शिक्षण जैसे पढ़ना, लिखना, गणित एवं दैनिक जीवन के कौशल नहीं कर पाते हैं। ऐसे विद्यार्थियों के लिए वैयक्तिक शैक्षणिक कार्यक्रम बनाया जा सकता है। मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की आवश्यकता अनुसार कार्यात्मक शिक्षण से लक्ष्य का चुनाव करना चाहिए।

मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों के लिये कार्यात्मक शैक्षणिक अनुकूलन कौशल की आवश्यकताएं

दैनिक जीवन में आवश्यकताएं

कार्यात्मक शिक्षण बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थी के व्यक्तिगत विकास में सहायक होता है। इससे विद्यार्थी दैनिक जीवन के क्रिया–कलाप में आत्मनिर्भर बनता हैं, एवं समाज के मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता हैं। कार्यात्मक शिक्षण विद्यार्थियों के–

- व्यक्तिगत विकास में सहायक होती है।
- सामाजिक कौशल विकास में सहायक होती है।
- दैनिक जीवन के क्रिया–कलाप में आत्मनिर्भर बनाती है।
- स्वयं सहायता के कौशल विकास में सहायक होती है।
- कार्यात्मक पाठन बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाता है।
- कार्यात्मक लेखन का ज्ञान होता है।
- कार्यात्मक गणित का ज्ञान होता है।
- कार्यात्मक शिक्षण निर्णय लेने में आत्मनिर्भर बनाता हैं।
- उसकी आवश्यकता अनुसार दैनिक, मासिक, साप्ताहिक, वार्षिक जरुरतों में आत्मनिर्भर बनाता हैं।
- सामान्य नियमों का पालन करना सिखाता है।
- पैसे का लेन–देन करना सिखाता है।
- समय का ज्ञान करवाता है।
- व्यवसायिक कौशल का ज्ञान देता है।
- व्यवसायिक आत्मनिर्भर बनाता हैं।
- विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करना या दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करने का ज्ञान करवाता है।

साप्ताहिक आवश्यकताएं

साप्ताहिक आवश्यकताओं में चादर बदलना, कपड़े स्त्री करना, कपड़े धोना, दाढ़ी बनाना।

मासिक आवश्यकताएं

मासिक आवश्यकताओं में घरेलु राशन खरीदना, बिजली का बिल जमा करना, टेलीफोन का बिल जमा करना।

वार्षिक आवश्यकताएं

दीपावली की सफाई, त्यौहारों में नए कपड़े खरीदना, जन्मदिन मनाना, 15 अगस्त, 26 जनवरी एवं विभिन्न प्रकार के त्यौहार मनाना।

वर्णमाला की पहचान

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों की तरह ही वर्णमाला की पहचान करवानी होती है। परन्तु उन्हें वर्णमाल की पहचान कराने के लिये कौशलों की आवश्यकता होती है :–

- अपने नाम की स्पेलिंग पढ़ एवं लिख पाना ताकि उसका नाम उसकी पुस्तक या बुलेन बोर्ड पर लिखा हो तो वह उसे पहचान कर पढ़ सके।
- दुकानों में, अस्पताल, सिनेमा घर में विभिन्न साईन बोर्ड को पढ़ पाना ।
- रोजमर्रा की घरेलु वस्तुओं के नाम पढ़ पाना।
- प्रशिक्षण देते समय आज सरल भाषा का प्रयोग करे।

संख्या की पहचान

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों की तरह संख्या की पहचान नहीं करवा पाते है परन्तु उन्हें निम्न कौशलों से संख्या की पहचान करवा सकते है –

- गणित संकल्पना सीखने के लिये वास्तविक वस्तुओं का उपयोग करना।
- वह गणित संकल्पना सिखाये, जो विद्यार्थियों को रोजमर्रा की जिन्दगी में उपयोगी हो ।
- एक–एक कर गिनती सिखाये ।
- मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को कम–ज्यादा, अनेक–कुछ, बड़ा–छोटा आदि प्रशिक्षण दे।

मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों में कार्यात्मक शैक्षणिक अनुकूलन कौशल को बढ़ाने के दौरान आने वाली समस्याएं

- व्यक्तिगत जरूरतों एवं क्षमताओं में परिवर्तन की समस्या ।
- निर्देशों को समझाने एवं पालन करने के संबंध में आने वाली समस्या।
- व्यवहार परिवर्तन की समस्या।
- संवेगों की अभिव्यक्ति करने संबंधी समस्याएं।
- स्वं निर्देशन का अभाव।
- स्व.–देखभाल तथा दैनिक निर्वाह कौशल का अभाव ।
- विचारों, भावों एवं भावनाओं को व्यक्त करने की समस्या।
- अमूर्त संकल्पनाएं एवं अमूर्त निदेश समझने में कठिनाईया
- कारण एवं प्रभाव की समझ का अभाव ।
- सामान्यीकरण ना कर पाना ।
- क्रियात्मक विकास संबंधी समस्या।
- विलम्बित भाषा विकास ।
- एकाग्रता का अभाव।
- अनुप्रयुक्त व्यक्तित्व संबंधित समस्या ।

- सामाजिक कौशल की समस्या ।
- समायोजन की समस्या।

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों में कार्यात्मक शैक्षणिक अनुकूलन कौशल को बढ़ाने में आने वाली समस्याओं के निवारण के लिये प्रशिक्षण आव्यूह

- **विद्यार्थियों की उपस्थिति लेना**

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की कक्षा में विद्यार्थियों की उपस्थिति लेने का मुख्य उद्देश्य यह भी होता है, कि वह उनके नाम को पहचाने एवं याद रखे और साथ ही अपने दोस्तो के नाम को भी पहचाने एवं याद रखे ।

- **कार्य विश्लेषण**

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को किसी भी कार्य को सिखाने में बहुत ज्यादा समय लगता है। वे जल्दी नहीं सिख पाते है। इसके लिये प्रत्येक कार्य को छोटे–छोटे भागों में बाटा जाता है फिर उन्हें सिखाया जाता है। कार्य विश्लेषण वह प्रशिक्षण आव्यूह है जिसमें हम सामान्य विद्यार्थियों को भी कठिन विषय वस्तु सिखा सकते है।

- **निर्देश**

निर्देश के माध्यम से मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को विषय वस्तु को कैसे करना है यह मौखिक रूप से बताया जाता है। एवं निर्देश एक ऐसा प्रशिक्षण आव्यूह है, जो सामान्य विद्यार्थियों की कक्षा में भी प्रयोग में लाया जाता है, क्योंकि सही निर्देश प्राप्त होने पर विद्यार्थी उसे ध्यान से सुनता है व वैसा करता है। उदाहरण के लिये प्रार्थना के लिये खड़े हो जाओ, अपने स्थान पर बैठिए, अपनी वस्तुए स्थान पर रखी है, खाना खाने के पहले हाथ धोईए आदि निर्देश देकर मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को वांछनीय व्यवहार सिखाया जाता है।

- **श्रृंखलाबद्धता**

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को विषय वस्तु को क्रिया विश्लेषण द्वारा छोटे–छोटे चरणों में रखना और उन चरणों को क्रमबद्ध तरीके से पूरा करते हुए व्यवहार विशेष को सिखाना ही श्रृंखलाबद्धता कहलाता है।

- **मचान (Scaffolding)**

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की कक्षा में प्रशिक्षण के दौरान कार्य के अन्तर्गत इस प्रशिक्षण आव्यूह का प्रयोग किया जाता है । इस प्रशिक्षण आव्यूह के अन्तर्गत शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को एक विशेष प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है। जब वह कोई विषय वस्तु सीखते है अथवा कोई नयी अवधारणा या कौशलों को सीखते है, इस प्रशिक्षण आव्यूह के माध्यम से विद्यार्थियों की कई समस्याओं का हल हो जाता है एवं वह विषय वस्तु को सीखकर वांछनीय व्यवहार को करना सीखता है।

- **पुर्नबलन**

पुर्नबलन मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिये बहुत आवश्यक प्रशिक्षण आव्यूह है । जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों द्वारा एवं घर में माता–पिता के द्वारा भी बच्चे को दिया जाना चाहिये क्योकि पुर्नबलन से मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की सही अनुक्रिया करने की सम्भावना बढ़ जाती है, एवं उसके व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने के लिये सहायक होती है।

- **अभिप्रेरणा**

अभिप्रेरणा के द्वारा लक्ष्य आधारित व्यवहार को प्राप्त किया जा सकता है। मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को अभिप्रेरणा के द्वारा उनके व्यवहार में बदलाव लाया जाता है एवं उन्हें सही अनुक्रिया सिखाई जाती है। अभिप्रेरणा पुरस्कार, प्रोत्साहन, स्पर्श करना, भावमुद्रा, शेपिंग आदि के द्वारा भी दी जाती है।

- **दृश्यों का प्रयोग**

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की कक्षा में शिक्षक द्वारा विषय वस्तु को पढ़ाते समय चार्ट, मॉडल, चित्र आदि का प्रयोग करके दृश्यों के माध्यम से विषय वस्तु को समझाकर शिक्षण–अधीगम प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं को दूर किया जा सकता है। दृश्यों का प्रयोग सामान्य कक्षा–कक्ष में भी शिक्षक द्वारा करके विषय वस्तु को और अधिक रूचिकर बनाया जा सकता है।

- **विद्यार्थियों की गतिविधियां**

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की कक्षा में एवं सामान्य विद्यार्थियों की कक्षा में यह देखा गया है, कि विद्यार्थियों को श्याम पट्ट पर लिखना बहुत अच्छा लगता है अतः विषय वस्तु को पढ़ाने के दौरान विद्यार्थियों को उस विषय वस्तु को श्याम पट्ट पर लिखने के लिये कहे ताकि उनकी रूचि और अधिक सीखने के लिये हो ।

- **मॉडलिंग**

मध्यम बौद्धिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की कक्षा में लक्ष्य व्यवहार विशेष को सिखने की प्रक्रिया में, जब शिक्षक स्वयं उस व्यवहार को करके दिखाता है, ताकि विद्यार्थी भी लक्ष्य व्यवहार शिक्षक के साथ–साथ स्वयं भी करते जाता है। उस पूरी प्रक्रिया को मॉडलिंग कहा जाता है।

निष्कर्ष

मध्यम बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों को कार्यात्मक शैक्षणिक अनुकूलन कौशल की दैनिक जीवन में बहुत आवश्यकता होती है । कार्यात्मक शैक्षणिक अनुकूलन कौशल के संबंध में आने वाली समस्याओं को दिये गये प्रशिक्षण आव्यूह का शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा प्रयोग करने से समस्याओं को दूर किया जा सकता है, एवं इन्हें समाज में मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार, सु. एवं आर्या, रा. (2015). *कार्यात्मक कौशल शिक्षण,* एस.आर. पब्लिशिंग हाउस ।

कुमार, म. एवं जांगड़ा. रा. (2015). *मानसिक मंद व्यक्तियों हेतु पाठ्यक्रम विकास, व्यवहार परिमार्जन एवं व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम*, एस.आर. पब्लिशिंग हाउस।

गुप्ता, एस. (2000). *जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षक प्रशिक्षकों हेतु विशेष शिक्षा संबंधी प्रशिक्षण सामग्री,* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान।

ग्रोवर, उ. एवं सिंह, प्र. (2014). *बौद्धिक अक्षमता निर्देश पुस्तिका, विशेष शिक्षा विभाग,* राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, मनोविकास नगर सिकन्दराबाद।

जायसवाल, अ. (1978). *शिक्षणीय मंदबुद्धि बालकों के व्यक्तित्व प्रतिमान का अध्ययन* [अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध]. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) ।

जमान, एस. एवं अख्तर, एन. (2011). *मानसिक रूप से विकलांग बच्चों की माताओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन* [अप्रकाशित हस्तलिपि]. प्रोतिबोधि फाउडेशन बांग्लादेश ।

जोसेफ, आर. (2011). *विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास,* समाकलन पब्लिशर्स प्रा.लिमिटेड।

जोशी, अ. (2014). *शिक्षण दक्षता एवं सुक्ष्म शिक्षण,* एच.पी. भार्गव बुक हाउस।

थ्रेसियाकुट्टी, एटी. एवं गोविन्दराव, एल. (2014). *मानसिक विकलांग व्यक्तियों का पाठ्शाला से कार्य तक परागमन एवं गाईड,* राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, मनोविकास नगर सिकन्दराबाद।

धरप, एस. (1986). *मंदबुद्धि बालकों की शिक्षा संबंधी समस्याओं की जांच* [अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध]. शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)।

नारायण, ज. एवं कुट्टी, एटी. (1990). *सामाजिक कौशल,* राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, मनोविकास नगर सिकन्दराबाद।

निगम, नि., निघोजकर, मौ. एवं शर्मा, सु. (2022). *समावेशी विद्यालय का सृजन,* ठाकुर पब्लिकेशन, प्रा.लि.।

पेशापवरिया, री. एवं वेकटेसन, एस. (1999). *मानसिक मंद बच्चों के शिक्षण की व्यवहारिक पद्धति – शिक्षकों के लिए पुस्तिका,* राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, मनोविकास नगर सिकन्दराबाद।

प्रसाद, दी. (2016). *अनुसंधान और सांख्यिकी,* एस.आर. पब्लिशिंग हाउस।

फेलिक्स, फा. थॉ. (2000). *विकास की ओर : मानसिक विकलांग व्यक्ति, परिवार और समाज का अपनी एकीकरण,* केन्द्रीय मानसिक विकलांगता संस्थान, तिरूवनन्तपुरम।

बिष्ट, आ. एवं सक्सेना, सा. (2014). *विशिष्ट बालक,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स ।

माधवन, टी. (2011). *मानसिक मंदन,* राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, मनोविकास नगर सिकन्दराबाद।

मिश्र, प्रि. एवं रानी, द. (2019). *बहु–दिव्यांगता,* कनिष्क पब्लिशिंग हाउस।

मटानिया, आ. (2020). *शिक्षण विधियाँ और सामग्री का विकास,* कनिष्क पब्लिशिंग हाउस।

मटानिया, आ. (2020). *पाठ्यक्रम रणनीतियाँ,* कनिष्क पब्लिशिंग हाउस।